

प्रेस विज्ञप्ति

एफएसएसएआई ने चंडीगढ़ को “सही खाने, फोर्टिफाइड खाने” पर जोर दिया: सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से लड़ने को सौहार्दपूर्ण प्रयास जरूरी

नई दिल्ली, 29 अगस्त, 2018: रक्त अल्पता जैसी फैली सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से निपटने के प्रयास के तहत भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने हरियाणा, पंजाब और चंडीगढ़ में खाद्य पदार्थों में सूक्ष्म पोषक तत्वों को व्यापक स्तर पर डालने की दिशा में प्रयास कर एक कदम आगे बढ़ाया है। फूड फोर्टिफिकेशन के महत्व के बारे में स्थानीय मीडिया को संवेदनशील बनाने के लिए चंडीगढ़ में पहली बार मीडिया कार्यशाला आयोजित की गई। जीवन के प्रथम 1000 दिनों में पोषण का महत्व, अधिक नमक, चीनी और वसा वाली चीजों का कम सेवन और खाद्य सुरक्षा जैसी महत्व की चीजों को भी इसमें शामिल किया गया। चूंकि ज्यादातर लोग फूड फोर्टिफिकेशन और इसके स्वास्थ्य लाभों से अनजान हैं, इस कार्यशाला ने लोगों को जागरूक करने में अहम भूमिका निभाई।

एनएचएफएस- IV के मुताबिक चंडीगढ़ शहर में महिला आबादी का करीब 76 प्रतिशत एनीमिया से ग्रस्त है जोकि सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में दूसरा सबसे अधिक है। बच्चों (6 से 59 महीने की आयु) में एनीमिया 73 प्रतिशत है जोकि सभी उत्तरी राज्यों में भी चंडीगढ़ में सबसे अधिक है। फूड फोर्टिफिकेशन एनीमिया जैसी सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से लड़ने के लिए एक पूरक रणनीति है जोकि आसान, टिकाऊ, सुरक्षित और किफायती भी है। फूड फोर्टिफिकेशन के तहत गेहूं के आटे, चावल, सब्जियों, तेल, दूध और नमक जैसे प्रमुख भोजन में आयरन, आयोडीन, विटामिन ए और डी आदि जैसे प्रमुख विटामिन और खनिज डाले जाते हैं जिससे कि इनके पोषण के कंटेंट में सुधार लाया जा सके। हालांकि, ज्यादातर लोग फूड फोर्टिफिकेशन और इसके स्वास्थ्य लाभों से अनजान हैं और इसको लेकर शंका बनी हुई है।

इस कार्यशाला में फूड फोर्टिफिकेशन को लेकर प्रमुख मुद्दों पर चीजें स्पष्ट की गईं। गेहूं के आटे, मैदा और चावल (आयरन, फोलिक एसिड और विटामिन बी 12 के साथ) और खाद्य तेल (विटामिन ए और डी के साथ) एवं डबल फोर्टिफाइड साल्ट (आयोडाइन एवं आयरन के साथ) के लिए फोर्टिफाइड फूड्स के मानक 2 अगस्त, 2018 को गजट में प्रकाशित किए जा चुके हैं। ये मानक, पोषण व फोर्टिफिकेशन पर वैज्ञानिकों के पैनल में गंभीर चर्चा के बाद तैयार किए गए हैं। पैनल का गठन स्वास्थ्य लाभों और शामिल किए गए सूक्ष्म पोषक तत्वों में विषाक्तता के स्तरों के बीच संतुलन को ध्यान में रखकर पब्लिक हेल्थ विशेषज्ञों के साथ किया गया। ये मानक खुराक की एक रेंज उपलब्ध कराते हैं जिसका लक्ष्य पोषण के दैनिक सिफारिश भोजन भत्ता (आरडीए) का 30-35 प्रतिशत उपलब्ध कराना है। पहले से मिश्रित और फोर्टिफाइड प्रमुख भोजन में इस्तेमाल यह खुराक सुरक्षित सीमा के भीतर होती है और इसका जोर यह सुनिश्चित करने पर होता है कि यह सुरक्षित हो।

चंडीगढ़ ने स्वेच्छा से अपने आईसीडीएस और एमडीएम कार्यक्रमों के जरिए राइस फोर्टिफिकेशन शुरू किया है जिसे एक लाख लाभार्थियों को उपलब्ध कराया जाता है। हरियाणा ने भी स्वेच्छा से अपने आईसीडीएस और पीडीएस कार्यक्रमों में फोर्टिफाइड गेहूं आटा और साथ ही आईसीडीएस, एमडीएम और पीडीएस में फोर्टिफाइड वनस्पति तेल शुरू किया है। पंजाब भी अपने सुरक्षा नेट कार्यक्रमों में

फोर्टिफाइड फूड्स शुरू करने की तैयारी में है। खुले बाजार में फोर्टिफाइड खाद्य की पहचान के लिए A +F लोगो अधिसूचित किया गया है और इसकी उपलब्धता बढ़ रही है। वर्तमान में, फूड फोर्टिफिकेशन स्वेच्छा पर निर्भर है और इसे अनिवार्य किए जाने से पूर्व धीरे धीरे व्यापक स्तर पर स्वीकार्य बनाए जाने की जरूरत है।

एफएसएसएआई एक नई खाद्य संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 10 जुलाई को ईट राइट इंडिया नाम से एक देशव्यापी जनजागरूकता अभियान शुरू किया जिससे लोगों में सही खाना और भोजन की पसंद को लेकर जागरूकता पैदा हो सके। यह आंदोलन एफएसएसएआई, स्वास्थ्य विभाग, स्थानीय सरकारी निकायों और विकास साझेदारों के बीच एक सामूहिक प्रयास है जिसका उद्देश्य नागरिकों को उनके स्वास्थ्य और बेहतरी के लिए प्रोत्साहित करना है। इस आंदोलन में स्वच्छ खाना, स्वास्थ्यवर्धक खाना, फोर्टिफाइड फूड के उपभोग के लिए प्रोत्साहन और अधिक वसा, नमक और चीनी वाले खाद्य पदार्थों का सेवन घटाना शामिल है। इस कार्यशाला के बाद चंडीगढ़ में राज्य द्वारा ईट राइट इंडिया मूवमेंट शुरू किया गया। इस मौके पर स्थानीय मीडिया के जरिए नागरिकों के बीच सही खाने को लेकर सतत जागरूकता पैदा करने के लिए एफएसएसएआई, विश्व बैंक और हील फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से छह महीने का एक मीडिया पार्टनरशिप प्रोग्राम भी शुरू किया गया।

ईट राइट इंडिया मूवमेंट को सहयोग देने के लिए इस कार्यक्रम में पंजाब, हरियाणा और केंद्र शासित चंडीगढ़ से प्रमुख अधिकारियों ने भागीदारी दर्ज कराई। इनमें प्रशासक के सलाहकार श्री परिमल राय, शिक्षा एवं सामाजिक कल्याण व महिला एवं बाल विकास, चंडीगढ़ के सचिव श्री बी.एल. शर्मा, पंजाब सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के अपर सचिव श्री सतीश चंद्र शामिल हुए। सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवर, पोषण विशेषज्ञ और मेडिकल समुदाय, विश्वविद्यालयों कालेजों के प्रोफेसर, कार्यकारी शेफ और अन्य स्थानीय निकाय इस आंदोलन को अपना समर्थन देने के लिए इस साझा मंच के जरिए एक साथ आए।

इस मौके पर श्री परिमल राय ने कहा, ग्लोबल न्यूट्रिशन रिपोर्ट, 2017 में पाया गया कि पांच साल से कम उम्र के 38 प्रतिशत बच्चे अल्प विकसित हैं और 21 प्रतिशत बेकार हैं, जबकि प्रजनन क्षमता की आयु वाली 51 प्रतिशत महिलाओं में रक्त की अल्पता है और 22 प्रतिशत प्रौढ़ महिलाओं का वजन जरूरत से अधिक है। फोर्टिफाइड फूड अपनाने से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होगी और अधिक चीनी, नमक और वसा वाली चीजों का सेवन घटेगा। यह व्यक्ति एवं समाज में पोषक तत्वों की स्थिति सुधारने के आसान उपाय हैं।

आईसीएमआर की 2017 की रिपोर्ट- इंडिया: हेल्थ आफ नेशनस स्टेट्स का हवाला देते हुए श्री सतीश चंद्र ने कहा कि 1990 से 2016 तक भारत में मधुमेह रोगियों की संख्या कई गुना बढ़ी है। पंजाब और हरियाणा में मौत की शीर्ष 10 वजहों में दिल की बीमारी शामिल है। ईट राइट इंडिया आंदोलन एक बहुमत प्रासंगिक संदेश देता है कि हमारे दैनिक आहार में वसा, नमक और चीनी की मात्रा घटाकर हम हमारे स्वास्थ्य की स्थिति में एक बड़ा सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

विश्व बैंक में सीनियर न्यूट्रिशन स्पेशलिस्ट सुश्री आशी कोहली कटूरिया ने कहा, जीवन के प्रथम 1000 दिनों में अच्छे पोषण के महत्व पर भी इस कार्यशाला में जोर दिया गया। जीवन के शुरुआती दिनों में पोषण और उन दिनों में भी जब बच्चा अपनी मां के गर्भ में होता है, पोषण का पूरे जीवन असर रहता है। हाल के प्रमाणों से संकेत मिलता है कि पर्याप्त पोषण, जल्दी सीखना और उत्प्रेरणा बच्चों के लिए उनके वयस्क होने पर पूर्ण मानव संभावनाओं के दोहन के लिए महत्वपूर्ण हैं। जिन बच्चों को ये चीजें समय पर और उचित मात्रा में मिलती हैं, उनमें शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर ग्रहण क्षमता, अधिक आय और आर्थिक वृद्धि में ज्यादा योगदान देखने को मिलता है।

हरियाणा के स्वास्थ्य विभाग में खाद्य सुरक्षा आयुक्त डाक्टर साकेत कुमार ने फूड फोर्टिफिकेशन के लाभों को दोहराते हुए कहा कि चूंकि फोर्टिफिकेशन से व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आता, फोर्टिफाइड आहार का विकल्प चुनने मात्र से अच्छा स्वास्थ्य उपहार में मिलता है। उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया कि एफएसएसएआई के सहयोग से ईट राइट इंडिया आंदोलन और फूड फोर्टिफिकेशन से इस राष्ट्र के पोषण के परिदृश्य में व्यापक बदलाव आएगा।

इस मौके पर एफएसएसएआई के सीईओ श्री पवन अग्रवाल ने कहा, देश के बाकी हिस्सों की तरह चंडीगढ़ कुपोषण की दोहरी मार झेल रहा है। ये आंकड़े किसी भी तरह से इस शहर को मिले खिताब दि सिटी ब्यूटिफुल के लिए न्यायपूर्ण नहीं हैं। इसलिए एफएसएसएआई ने ईट राइट इंडिया आंदोलन शुरू करने और फूड फोर्टिफिकेशन से जुड़ी गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए चंडीगढ़ को पहले शहर के तौर पर चुना। हमें आशा है कि इससे नागरिकों में सामाजिक और व्यवहारिक परिवर्तन आएगा।

मीडिया पूछताछ के लिए संपर्क करें:

Ruchika Sharma
Food Safety and Standards Authority of India
E: sharmaruchika.21@gmail.com